Daily Gospel Reflections in Hindi

28 July 2019

लूकस 14: 7-14

THE MENTALITY OF THE DISCIPLE

''जो अपने को बड़ा मानता है, वह छोटा बनाया जायेगा, और जो अपने को छोटा मानता है, वह बड़ा बनाया जायेगा''– प्रभु येसु न केवल ''ईश्वर हमारे प्रेमी पिता'' सुसमाचार सुनाने अवतरित हुए थे बल्कि एक नई विचारधारा कायम करना भी उनका मकसद था। ''तुम लोगों ने सुना है कि कहा गया है – आंख में बदले आंख..... परंतु, मैं तुम से कहता हूं..... यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसके सामने कर दो'' (Mt. 5:38,39)।

उसी कड़ी में आज के सुसमाचार पाठ द्वारा प्रभु आदेश देते है कि किसी भी समारोह में सबसे अगले स्थान पर न बैठें। वैसे तो यह प्रायोगिक रूप से सही भी है और कोई नई शिक्षा भी नहीं है। ''बड़े लोगों के स्थान पर मत बैठो, क्योंकि किसी उच्चाधिकारी के सामने नीचा दिखाये जाने की अपेक्षा, अच्छा यह है कि राजा तुम से कहें,'' यहां आगे बढ़कर बैठिए'' (Proverbs 25:6,7)।

प्रेम और सेवा के बाद प्रभु के सबसे महत्वपूर्ण संदेश है विनम्रता। प्रभु कहते है– ''....मुझ से सीखो, मैं स्वभाव से नम्र और विनीत हूं'' (Mt. 11:29)। यह न केवल बातों से बल्कि प्रभु ने स्वयं अपने शिष्यों के पैर धोकर, अपने कर्म द्वारा हमें यह शिक्षा दी है। ''यदि मैं तुम्हारे प्रभु और गुरू– ने तुम्हारे पैर धोये है, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए'' (Jn. 13:14)। प्रभु के इस स्वभाव के बारे में संत पौलूस लिखते है''.....उन्होंने दास का रूप धारण कर तथा मनुष्यों के समान बनकर अपने को दीन–हीन बना दिया।... मरण तक, आज्ञाकारी बन कर अपने को और भी दीन–हीन बना लिया। इसलिए ईश्वर ने उन्हें महान बनाया... (Phil. 2:7-9)। इस विषय में संत पेत्रुस लिखते है– ''आप शक्तिशाली ईश्वर के सामने विनम्र बने रहें, जिससे वह आप को उपयुक्त समय में ऊपर उठाये (1Pet.5:6)।

ईश्वर की विचारधारा हम से काफी अलग हो सकती है। तभी तो प्रभु कहते है, ''जो पिछले है, अगले हो जायेंगे और जो अगले है, पिछले हो जायेंगे'' (Mt. 20:16)। आज के सुसमाचार पाठ में प्रभु कहते है, ''जो अपने को छोटा मानता है, वह बड़ा बनाया जायेगा''। नबी एजेकिएल ने भी यह बात कही थी''.... नीचे को ऊँचा किया जायेगा और ऊँचे को नीचा'' (Eze. 21:31)। हमें अपनी सोच और विचारधारा बदलनी होगी। क्योंकि हमारी सोच दुनियादारी में आधारित है। दुनियादारी कहती है कि हमें हर हाल में अपने आप को आगे बढ़ाना है। लेकिन प्रभु कहते है– ''... वह भले और बुरे, दोनों पर अपना सूर्य उगाता तथा धर्मी और अधर्मी, दोनों पर पानी बरसाता है' (Mt. 5:45)। इसलिए, ''अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते है, उन के लिए प्रार्थना करो। इससे तुम अपने स्वगिक पिता की संतान बन जाओगे'' (Mt. 5:44,45)। यह सचमुच एक नई और अलग विचारधारा है।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019